प्रातःक्लास 5/6/68 ओमशान्ति शिवबाबा याद है?

ओमशान्ति। बाप कहे बच्चों को आत्मा–अभिमानी वा देही–अभिमानी हो बैठो; क्योंकि आत्मा में ही अच्छी वा बुरी संस्कार भरी जाती है। सभी का असर आत्मा पर पड़ता है। आत्मा को ही पतित कहा जाता है। पतित आत्मा कहा जाता है तो ज़रूर जीवात्मा ही होगा ना। आत्मा शरीर साथ ही होगी। पहली–2 बात कहते हैं आत्मा होकर बैठो। अपन को शरीर नहीं, आत्मा समझ बैठो। आत्मा ही इन ऑरगन्स को चलाती है। घड़ी–2 अपन को आत्मा समझने से परमात्मा याद आवेगा। अगर देह याद आई तो देह का आप याद आवेगा; इसलिए ही आप कहते हैं आत्माभिमानी बनो। बाप पढ़ा रहे हैं, यह है पहला सबक़। तुम आत्मा, अविनाशी हो। शरीर, विनाशी है। अविनाशी आत्माओं को अविनाशी परमात्मा ज्ञान देने आए हैं। हम आत्मा हैं यह पहला सबक़ है। याद नहीं करेंगे तो कच्चे पड़ जावेंगे। मैं आत्मा हूँ, शरीर नहीं हूँ, यह सबक़ इस समय बाप पढ़ाते हैं। आगे कोई भी पढ़ाते नहीं थे। बाप आए ही हैं आत्म(ा)–अभिमानी बनाकर ज्ञान देने लिए। पहला नम्बर ज्ञान देते हैं, हे आत्माएँ तुम पतित ज़रूर हो; क्योंकि यह है ही पतित पुरानी दुनियाँ। पुरानी दुनियाँ में सभी पतित ही होते हैं। प्रदर्शनी में भी तुम बच्चे बहुतों को समझाते हो। प्रश्न आदि करते हैं। तो जब दिन के टाइम रेस्ट मिलती है उस समय आपस में मिलना चाहिए। किसने क्या–2 प्रश्न पूछे, हमने क्या समझाया। फिर उनको समझाना है इस पर ऐसे नहीं ऐसे समझाना चाहिए। समझाने की युक्ति सभी की एक नहीं होती है। मूल बात है अपन को आत्मा हो या देह; क्योंकि दो बाप सभी के ज़रूर हैं। जो भी देहधारी बाप है उनका लौकिक बाप भी है, पारलौकिक भी है। एक बड़ा बेहद का बाप, एक छोटा हद का बाप। हद का बाप तो कॉमन है। यहाँ तुमको मिला है बेहद का बाप। तुम जानते हो वह हम आत्माओं को बैठ समझाते हैं। वह एक ही बाप भी है, टीचर भी है, गुरु भी है। यह पक्का कर देना चाहिए। जब तुम किसको समझाते हो, जो–2 प्रश्न तुमसे पूछते हैं उस पर आपस में बैठना चाहिए। हरेक सुनावे, हमसे फलाने ने यह–यह पूछा है, हमने यह रेसपॉण्ड किया। प्रश्न तो भिन्न–2 पूछेंगे। उनका रेसपॉण्ड चाहिए रियल। देखना चाहिए उनको कशिश में लाया, सैटिसफाय हुआ। नहीं तो फिर करेक्शन निकालनी चाहिए। जो होशियार हैं उनको भी बैठना चाहिए। छुड़–बिछुड़ (नहीं) हो जाना है। तुमको टाइम मिलता है दिन के समय। ऐसे नहीं कि भोजन खाते हैं; इसलिए नींद आ(ती) है। जो बहुत खाना खाते हैं उनको नींद की घर आ जाती है। देवताएँ खाना बहुत ही थोड़ा खाते हैं; क्योंकि (खुशी) है ना; इसलिए कहा जाता है खुशी जैसी खुराक नहीं। तुम बच्चों को अथाह खुशी होनी चाहिए। ब्राह्मण बनने में बड़ी खुशी है। ब्राह्मण बनते हैं तब ही उनको खुशी मिलती है। देवताओं को खुशी है ना; क्योंकि उनको पास धन–माल, महल आदि सभी कुछ है। तो उन्हों के लिए खुशी ही काफ़ी है। खुशी में खाना भी बहुत थोड़ा खावेंगे। यह भी एक कायदा है। जास्ती खाने वाले को जास्ती नींद आवेगी। घर जिसको आती होंगी वह किसको समझा न सकेंगे। जैसे– लाचार। यह ज्ञान की बातें तो बड़ी ही खुशी से सुननी और सुना(नी) चाहिए। समझाने में भी सहज होगा। मूल बात है बाप का परिचय। ब्रह्मा को तो कोई जानते नहीं। यह भी(ी) समझते हो प्रजापिता ब्रह्मा है। ढेर के ढेर प्रजा है। यह प्रजापिता ब्रह्मा कैसे होगा इस पर बहुत अच्छी रीत समझाना है। कई मनुष्य ब्रह्मा को देख मूँझते हैं। अरे! इतनी ब्रह्माकुमारियाँ हैं। तो ज़रूर प्रजापिता होगा ना। प्रजापिता बिगर प्रजा कैसे होगी। शिवबाबा के संतान तो ठीक है; परन्तु प्रजा के रूप में कैसे आवे। प्रजापिता ब्रह्मा। बाप ने समझाया है– इनके बहुत जन्मों के अंत में, वानप्रस्थ अवस्था में मैं प्रवेश करता हूँ। नहीं तो रथ कहाँ से आवे। रथ गाया हुआ ही है शिवबाबा के लिए। रथ में कैसे आते हैं। इसमें मूँझे हैं। रथ तो ज़रूर चाहिए ना। कृष्ण तो हो न सके। तो ज़रूर ब्रह्मा द्वारा समझावेंगे। ऊपर से तो नहीं बोलेंगे। ब्रह्मा कहाँ से आया। बाप ने सुनाया मैं इनमें प्रवेश करता हूँ। जिसने पूरे 84 जन्म लिए हैं। यह खुद नहीं ..... मैं सुनाता हूँ। इनमें बहुत मूँझें हैं। कृष्ण को तो रथ की दरकार ही नहीं। कृष्ण कहने से फिर तो भागीरथ .... हो जाता। कृष्ण को भागीरथ नहीं कहा जाता। उनका तो पहला जन्म है प्रिंस का। तो बच्चों को.....

अन्दर में घोटना चाहिए, विचार–सागर–मंथन करना चाहिए। यह तो बच्चे जानते हैं वह बात तो नहीं है जो शास्त्रों में लिख दी है। बाकी यह ठीक है। विचार–सागर–मंथन हुआ, कलश ल॰ को दिया। उसने फिर औरों को अमृत पिलाया। तब ही स्वर्ग़ के गेट्स खुले; परन्तु परमपिता परमात्मा को तो विचार–सागर–मंथर करने की दरकार ही नहीं। वह तो बीज रूप है। उनमें नॉलेज है। वही जानते हैं। तुम भी नहीं जानते थे। अभी यह अच्छी रीत समझना ज़रूर है। समझने बिगर देवता पद कैसे पावेंगे। बाप समझाते हैं आत्माओं को रिफ्रेश करने लिए। बाकी तो कुछ भी जानते ही नहीं। वह है सारा भक्ति मार्ग। भक्ति मार्ग को बिल्कुल अलग, ज्ञान मार्ग को बिल्कुल अलग रखना है। बाप आकर समझाते हैं अभी तुम्हारा लंगर भक्ति मार्ग से उठा। अभी ज्ञान मार्ग में चला है। बाप बच्चों को मुख्य बात तो यही समझाते हैं कि पहले–2 दो बाप का परिचय दो। साधु–संत आदि कभी ऐसे नहीं कहेंगे कि तुमको दो बाप हैं। वह तो बाप को जानते ही नहीं। बाप खुद कहते हैं, मैं तुमको ज्ञान देता हूँ। वह प्रायः लोप हो जाता है। एक है निराकारी, दूसरा है साकारी बाप। समझाया तो बहुत अच्छा जाता है; परन्तु माया ऐसी है तो कशिश कर गन्द में ले जाती है। पतित बन पड़ते हैं। बाप समझाते हैं यह वैश्यालय विनाश होना है। मैं शिवालय की स्थापना करने आया हूँ। सतयुग को कहेंगे शिवालय। कोई पूछे, शिवालय किसने स्थापन किया? बोलो, शिवबाबा ने। नाम ही है शिवालय। यह है वैश्यालय। 5 विकार रूपी माया रावण ने वैश्यालय बनाया है। राम राज्य और रावण राज्य बिल्कुल कॉमन है। रावण राज्य कहा जाता है रात को, जबकि मनुष्य पतित बनते हैं। सतयुग–त्रेता में कोई भी मनुष्य पतित होता ही नहीं। उसको कहा जाता है स्वर्ग़। दुनियाँ यह नहीं जानती स्वर्ग़ किसने स्थापन किया। अभी तुम समझाते हो शिवबाबा ही शिवालय स्थापन करते हैं। शिवालय का उद्घाटन किसने किया? बेहद के बाप ने। वा स्वर्ग़ की स्थापना तो ज़रूर भगवान ही करेंगे। अभी तो है शैतानी राज्य। बाप कहते हैं, काम चिक्षा पर चढ़ एकदम क(ि)ब्रिस्तान में आकर पड़े हो। फिर यहाँ ही परिस्तान होगा ज़रूर। आधा कल्प परिस्तान, आधा कल्प कब्रिस्तान चलता है। फिर बाप आकर परिस्तान की स्थापना करते हैं। यह भी जानते हो अभी सभी कब्र दाख़िल होने हैं। काम चिक्षा पर चढ़े हुए हैं ना। सभी कब्र दाख़िल होने हैं। तुम सीढ़ी पर अच्छी रीत समझा सकते हो। यह है ही कब्रिस्तानियों का राज्य। विनाश तो ज़रूर होना ही है। इस धरणी पर अभी कब्रिस्तान है। फिर यही धरणी चेंज हो जावेगी अर्थात् आय(र)न एज्ड दुनियाँ बदल गोल्डेन एज्ड दुनियाँ होगी। फिर दो कला कम होगी। तत्वों की भी कला कम होती जाती है। तो फिर उपद्रव मचाते हैं। सतयुग में उपद्रव नहीं मचाते। यहाँ तो हरेक चीज़ उपद्रव मचाती है। पानी भी कितना उपद्रव मचाती है। सभी माया के गुलाम बन पड़े हैं। अभी तुमको रावण को गुलाम बनाना है। यह भी हार और जीत का खेल बना हुआ है, जिसको अच्छी रीत समझना है। अगर नहीं समझते तो गोया कौड़ी मिसल हैं। कोई वैल्यु नहीं। यह वैल्यु तो बाप बैठ बतलाते हैं। गाया भी जाता है हीरे जैसा जन्म..... तुम भी पहले बाप को नहीं जानते थे, तो कौड़ी जैसी वैल्यु थी। अभी बाप आकर हीरे जैसा बनाते हैं। बाप से हीरे जैसा जन्म मिलता है। फिर कौड़ी जैसे क्यों बन पड़ते हो। ईश्वरीय संतान हो ना। गायन भी है आत्माएं और परमात्मा। वहाँ शान्तिधाम में जब हैं तो उस मिलन में कोई फायदा नहीं होता। वह तो सिर्फ़ पवित्रता का स्थान है। यहाँ तो तुम जीवात्माएँ हो। और परमात्मा बाप उनको अपना शरीर नहीं है। वह शरीर धारण कर तुम बच्चों को पढ़ाते हैं। तुम बाप को जानते हो और कहते हो बाबा। बाप भी कहते हैं ओ बेटे। लौकिक बाप भी कहेंगे, बाल बच्चों आओ तो तुमको टोली खिलाऊँ। झट सभी भागेंगे। यह बाप भी कहते हैं, बच्चे आओ तुमको वैकुण्ठ का मालिक बनाते हैं। तो ज़रूर सभी भागेंगे। अगर नहीं आते तो मूर्ख कहेंगे ना। पुकारते भी हैं हम पतितों को पावन बनाओ। अभी निश्चय है तो मानना चाहिए ना। बुलाया भी है बच्चों ने। आए भी बच्चों के लिए हैं। बच्चों को ही कहते हैं तुमने बुलाया है मैं आया हूँ। पतित–पावन भी बाप को ही कहते हैं। गंगा आदि के पानी से तुम पावन नहीं बन सकते हो।

आधा कल्प तुम भूल में चले हो। भगवान को ढूँढ़ते हैं; परन्तु किसको भी समझ में नहीं आता। बाप कहते हैं बच्चों तो तुम बच्चों को भी उस हुलास से निकलना चाहिए। हे बाबा; परन्तु इतना हुलास से निकलता नहीं है। इनको देह–अभिमान कहा जाता न कि देही–अभिमानी। अभी तुम बाप के सम्मुख बैठे हो। बेहद के बाप को याद करने से बेहद की बादशाही ज़रूर याद आवेगी। ऐसे बाप को कितना प्यार से रेसपॉण्ड करना चाहिए। बाप तुम्हारे बुलाने से आया है, ड्रामा अनुसार। एक मिनिट भी आगे–पीछे नहीं हो सकता। सभी कहते हैं ओ फादर। रहम करो, लिबरेट करो। अभी हम सभी रावण के जज़ीरों में है। आप हमारे गाइड बनो। तो बाप गाइड भी बनते हैं। सभी उनको बुलाते हैं ओ लिबेरट ओ गाइड। आकर हमारा गाइड बनो। हमको भी साथ ले चलो। अभी तुम संगम पर खड़े हो। बाप सतयुग की स्थापना कर रहे हैं। यह है कलयुग। 500 करोड़ मनुष्य ही हैं। सतयुग में सिर्फ़ देवी–देवताएँ ही होते हैं। तो जरूर विनाश होता होगा। वह भी सामने खड़ा है। जिसके लिए गायन है सांइस घमण्डी तो कितना बुद्धि से अकल निकालते हैं। कहते हैं, एक दुनियाँ तो क्या 4/5 दुनियाएँ हों तो भी यहाँ बैठे ख़त्म कर देंगे। वह है यादव सम्प्रदाय। फिर हिस्ट्री रिपीट होनी है। अभी तो सतयुग की हिस्ट्री रिपीट होनी है। अभी तो सतुयग की हिस्ट्री रिपीट होगी। तुम समझते हो हम नई दुनियाँ में ऊँच पद पाने लिए पुरुषार्थ कर रहे हैं। पवित्र ज़रूर बनना है। तुम समझाते हो आठ/नौ वर्ष मैं विनाश होना है। बच्चे आदि तो तुम्हारे जीते न रहेंगे, न कोई वारिस बनेंगे, न शादी आदि करेंगे। बहुत गई बाकी थोड़ी रही। थोड़ा समय है। उनका भी हिसाब है। आगे ऐसे नहीं कहते थे। अभी टाइम थोड़ा है। पहले वाले जो मरे हुए हैं वहां जन्म नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार लिया है। कोई बहुत यहाँ आते भी होंगे। दिखाई पड़ता है जैसे कि यहाँ का बिछुड़ा हुआ है। उनको ज्ञान बिगर मज़ा ही नहीं आता। माँ–बाप को भी कहते हैं हम यहाँ जावेंगे। यह तो सहज समझने की बातें हैं। विनाश तो ज़रूर होना ही है। लड़ाई की तैयारी भी देख रहे हो। आधा खर्चा इन्हों का इस लड़ाई के स(ा)मान में ही लग जाता है। ऐरोप्लेन आदि कैसे–2 बनाते हैं। न ऐरोप्लेन काम आवेंगे न बारूद का(म) में आवेगा। वह कोशिश कर इम्प्रु करते जाते हैं। कहते हैं घर बैठे भी सारी खलास जावे। ऐसी–2 चीज़ें बनाते रहते हैं; क्योंकि हॉस्पिटल आदि तो रहेंगे नहीं। ड्रामा में यह भी जैसे बाप के इशारे मिलते हैं। वह भी ड्रामा में नूँध है। समझते हैं ऐसा न हो जो बीमार पड़ जाए। मरना तो सभी को ज़रूर है। राम गयो..... जो योग में रह आयु बढ़ाते होंगे उनकी आयु ज़रूर बढ़ेगी। तुम कहेंगे, फलानी क्यों गई? बाबा कहेंगे, योग की ताकत न थी; इसलिए आयु नहीं बढ़ी। योगबल हो, तो आयु भी बढ़ती रहे। अकाले मृत्यु (क)यों होना चाहिए। योगबल वाले अपनी आयु को बढ़ाते रहेंगे। अपनी खुशी से शरीर छोड़ेंगे। जैसे बाबा मिसाल बताते हैं– ब्रह्मा ज्ञानी है वह भी ब्रह्म में जाने लिए ऐसे ह(ी) खुशी से शरीर छोड़ते हैं; परन्तु ब्रह्म में कोई जाते नहीं हैं। न पाप कटते हैं। पुनर्जन्म फिर भी यहाँ ही लेते हैं। पाप कटने की युक्ति बाप ही बतलाते हैं कि मामेकं याद करो। और कोई को याद न करना है। ल.ना. को भी याद न करना है। तुम जानते हो इस पुरुषार्थ से हम यह पद पाते हैं। स्वर्ग़ की स्थापना हो रही है। हम पढ़ रहे हैं यह पद पाने लिए। नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार इन्हों की जो डिनायस्टी चली है वह बाप अभी स्थापन कर रहे हैं, पुरुषोत्तम संगमयुग पर। तुम भाषण आदि भी ऐसा करो तो एक्युरेट किसकी बुद्धि में घुस जाए। पहले–2 बाप की पहचान। तुम किसके बच्चे हो। बाप का ना। तुम झट कहेंगे शिवबाबा के बच्चे हैं और साकारी ब्रह्मा के बच्चे और बच्चियाँ हैं। इस समय है ईश्वरीय सम्प्रदा(य) और प्रजापिता ब्रह्मा मुखवंशावली हम सभी भाई–बहन हैं। ब्रह्मा कुमार–कुमारियों की शादी मुरादी होती नहीं। यह भी बाप समझाते हैं कई गिर पड़ते हैं। काम अग्नि जलाते हैं; परन्तु डर रहता है एक बार हम गिरा तो की कमाई चट हो जावेगी। काम से हराया तो पद भ्रष्ट हो जावेगा। कमाई कितनी बड़ी है। मनुष्य करके पदम, करोड़ कमाते हैं उनको यह थोड़े ही पता है कि 8/9 वर्ष में यह ख़त्म होना है। बॉम्ब्स बनाने वाले जानते हैं यह दुनियाँ ख़त्म होनी है। कोई हमको प्रेरते हैं। हम बनाते रहते हैं। अच्छा, मीठे–2 बच्चों को गुडमॉर्निंग।

रात्रि क्लास 5/6/68 ओमशान्ति शिवबाबा और वर्सा याद है?

यह है सच्चा–2 ईश्वरीय परिवार। फिर होगा दैवी परिवार। ईश्वरीय परिवार बड़ा या दैवी परिवार बड़ा? सारा मदार है पोज़ीशन पर। यहाँ तुम्हारा रॉयल रॉयलटियस पोज़ीशन है। बाकी तुम्हारे पास जो आते हैं वह कैसे–2 आते हैं सो तो तुम देखते हो। यह कोई समझते नहीं हैं कि हम वैश्यालय के निवासी हैं। हम विषस (विषियस) हैं। समझाने लिए बच्चों को मेहनत बहुत पड़ती है; क्योंकि समझाने से ट्र(ा)न्सफर करना है। मनुष्य से देवता बनाना है। मनुष्यों का कितना कैरेक्टर्स सुधरता है। कहाँ देवताएँ कहाँ मनुष्य। रात–दिन का फ़र्क पड़ जाता है, कैरेक्टर्स में। अभी तक भी बच्चे बहुत हैं जो अपनी चलन सुधारें तो अच्छा पद पा सकते हैं। आसुरी चलन से दैवी चलन में लाना बाप का ही काम है। और कोई सिखला न सके। तुम ब्राह्मण बच्चे ही जानते हो, बाबा आया हुआ है, शूद्र से बदली कर ब्राह्मण बनाने। फिर ब्राह्मण से चेंज हो देवता बनेंगे। यह है हंसों का संगमयुग। हंस कोई पक्षी नहीं है। इन ज्ञान रत्नों की कितनी वैल्यु है। बच्चों का वातावरण, चलन बड़ी अच्छी होनी चाहिए। रोज़ रात को देखना चाहिए हमारे में आसुरी चलन होगी तो नापस हो जावेंगे। स्वर्ग़ में जा न सकेंगे। हरेक को अपने चाल को देखना है। अपने ऊपर कृपा करनी है। श्रीमत पर चलना है। बाप रास्ता बताते हैं, जितना बाप को याद करेंगे उतना ख़ाद निकलेगी। तुम नब्ज़ तो सभी के देखते होंगे। हमारे धर्म का कोई है। तुम ढूँढ़ते हो सैम्पलिंग लगाने लिए। जंगल के मनुष्य जंगल के ही सैम्पलिंग लगाते रहते हैं। उनको यह पता नहीं है यह दैवी फूलों का बग़ीचा बना रहे हैं। जिसकी आयु भी कितनी बड़ी होती है। तुम सतयुग के मालिक बनने वाले हो। यही खुशी बच्चों को होनी चाहिए। बाबा आया हुआ फिर से वर्सा देने लिए। रात्रिक्लासः– 6/6/68:– बहुतों को आगे चलकर हड्डीगुड नरम होगी। वृद्धि को पाना है ज़रूर। आजकल दुःख बहुत है ना। यह है शरारती दुनियाँ। बड़े आदमियों को भी मार डालते हैं। बच्चे यह तो समझ गए हो यह पुरानी दुनियाँ है। ड्रामा के आदि, मध्य, अंत कोई भी मनुष्य नहीं जानते। नेती–2 कहते हैं ; परंतु इसका अर्थ को जानते ही नहीं। बाप समझाते हैं, यह नॉलेज अभी तुमको मिलती है। सतयुग में दरकार नहीं रहती है। ज्ञान प्रायः लोप हो जाता है। तुम जानते हो हम जो प्रदर्शनी में समझाते हैं किसको समझ में आवेगा, किसको समझ में नहीं आवेगा ; क्योंकि नई बात है ना। यह सूर्यवंशी–चन्द्रवंशी राजधानी स्थापन हो रही है। तुम समझते हो हम विश्व के मालिक बनेंगे। तुम बच्चों के लिए ही गायन है, अति इन्द्रिय सुख गोप–गापियों से पूछो ; क्योंकि तुम ही विश्व के मालिक बनते हो। जो कभी स्वप्न में भी न था कि हम बन सकते हैं। समझाना चाहिए भगवान ही विश्व का मालिक बना सकते हैं। तुम बच्चे जानते हो पापा(बाप) आया हुआ है। यह बेहद का प(ा)पा है। प(ा)पा भी है सौदागर, रत्नागर भी है। जादूगर भी है। तुम बच्चे कहते हो, जो फिर भक्ति मार्ग में भी गायन चला आता है। जादूगर है। नई दुनियाँ स्थापन कर पुरानी दुनियाँ का विनाश करा देते हैं। यह कम जादूगरी है क्या। यह है पढ़ाई। तुमको खुशी होती है, ऊँच ते ऊँच भगवान हमको पढ़ाते हैं। राजयोग सिखलाते हैं। यह सिर्फ़ तुम बच्चों की ही बुद्धि में है। कोई–2 बंधन में है। यह भी गायन है, द्रौपदी ने पुकारा। हमको नंगन करते हैं, हमको नंगन करते हैं। अभी पुकारते हैं ; क्योंकि बाप कहते हैं पावन दुनियाँ में चलना है तो पतित नहीं बनना है। अबलाओं को सहन करना पड़ेगा। बाप धैर्य देते हैं बच्चे बाकी थोड़ा समय है। तुम्हारी पढ़ाई है, गुप्त है। जितना याद करेंगे उतना ताकत मिलेगी। बाप कहते हैं मैं सर्वशक्तिवान हूँ। तो ज़रूर शक्ति किसको मिलेगी ना। तो बुद्धि में रहना चाहिए हम भी कंचन बनते हैं फिर औरों को भी बनाते हैं। बाबा हमेशा कहते हैं, निश्चय बुद्धि हो तो बाप के पास ले आना चाहिए। तुम जानते हो बाबा के पास क्या सौगात ले जावें। अच्छे–2 फूलों को कोई समय माया मुरझाए देती है, तो देह–अभिमान में आ जाते हैं।

(अच्छा), मीठे–2 बच्चों को रूहानी बाप व दादा का याद प्यार गुडनाइट। रूाहनी बच्चों को रूहानी बाप की नम(स्ते)।